RNI NO. : MPHIN33094

वर्ष-11वां अंक 43

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

गुरुवाणी विद्वत संगोष्ठी, लोनावला की झलकियाँ

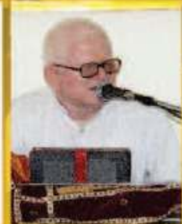

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक

बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक

श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक

विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक

स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स

गुरूदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक

श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर

परमसंरक्षक

श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई

श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा

श्रीमती आरती जैन, कानपुर

संरक्षक

श्री आलोक जैन, कानपुर

श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

मुद्रण व्यवस्था

स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय

"चहकती चेतना"

सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,

फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002

9300642434, 09373294684

chehakti chetna@yahoo.com

क्र.	विषय	पेज
1.	हमारे तीर्थक्षेत्र	2
2.	संपादकीय	3
3.	संदेश हमारा निर्णय आपका	4
4.	पांचों पांडवों का वैराग्य	5-6
5.	परिणामों का फल	7
6.	उपसर्ग में आराधना	8
7.	समवशरण	9-10
8.	अमर शहीद अमरचंद	11-12
9.	कविता - वात्सल्य पर्व	13
10.	अब नहीं भूलूंगी	14
11.	कर्मन की गति न्यारी-न्यारी	15
12.	सावधान	16
13.	टाईम टैबिल	17
14.	जन्म दिवस	18
15.	वैरागी हाथी	19
16.	प्रेरक प्रसंग	20
17.	हमारा इतिहास - इथोपिया....	21
18.	हमारे मुनिराज	22
19.	सेठ लक्ष्मीचंद	23
20.	कविता - चंदा मामा/चिड़िया	24
21.	समाचार	25-28
22.	कॉमिक्स	29-32

सदस्यता शुल्क - 400 रू. (तीन वर्ष हेतु)
1200 रू. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।

पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर

बचत खाता क्र.- 1937000101030106

IFS CODE : PUBN0193700

संपादकीय

सभी पाठकों को जय जिनेन्द्र और बच्चों को स्नेह। आप सब फिर से अपने स्कूल की पढ़ाई में लग गये होंगे और आपके माता-पिता भी आपके साथ व्यस्त हो गये होंगे। अगले माह दो पर्व आने वाले हैं - पहला 9 अगस्त को वात्सल्य पर्व रक्षाबंधन और दूसरा 26 अगस्त से दशलक्षण महापर्व।

हम सब रक्षाबंधन के पर्व को भाई-बहन का पर्व मानकर ही संतुष्ट हो जाते हैं। सुबह उठे मंदिर गये और बहन ने भाई को राखी मांगी और खाये पीये और पर्व पूरा हो गया। क्या आपको पता है कि ये पर्व मुनिराजों की रक्षा का पर्व है। 700 मुनिराजों पर घोर संकट आया और विष्णु कुमार मुनिराज द्वारा इनका उपसर्ग दूर किया गया। इस दिन को मुनि रक्षा का पर्व अर्थात् वात्सल्य पर्व के रूप में मनाया जाने लगा। परन्तु अन्य समाज की परम्पराओं के कारण जैन समाज के व्यक्ति भी भाई-बहन तक सीमित हो गये। आपसे निवेदन है कि इस दिन मुनिराजों को विशेष रूप से याद करें और उनकी भक्ति करें। बाजार की कोई भी चीज न खायें। प्रातः दस बजे के पहले कुछ भी न खायें और यदि बन सके तो रात्रि में कुछ भी न खायें और भावना भायें कि हमारे दिगम्बर मुनिराजों पर कभी कोई संकट न आये। यही रक्षाबंधन पर्व मनाने का तरीका है।

दूसरा महान शाश्वत पर्व है - दशलक्षण महापर्व। यह पर्व संयम का पर्व है। पर्व में आप सुबह-शाम जिनमंदिर अवश्य जायें। दस दिन तक बाजार की वस्तुओं का त्याग करें। यदि हो सके तो महापर्व पर टीवी न देखें या कम से कम देखें। मोबाइल गेम से दूर रहें।थोड़ा समय निकालकर जिनमंदिर अवश्य जायें। कार्यक्रमों में भाग लें।

जिनशासन हमें महासौभाग्य से मिला है। जिनमंदिरों और जिनवाणी की सुरक्षा हमारा कर्तव्य है। इसलिये इस महान जैन धर्म का अवश्य लाभ लें।

आपका
विराग शास्त्री

हमारे तीर्थ क्षेत्र -

सिद्धक्षेत्र उदयगिरि-खण्डगिरि

भारत में उड़ीसा प्रान्त है जिसे पहले उत्कल कहा था। भारत के राष्ट्रगान में उत्कल शब्द भी आता है। इसी उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर शहर में स्थित है सिद्धक्षेत्र उदयगिरि-खण्डगिरि। यहाँ दो पहाड़ियाँ हैं जिन्हें उदयगिरि और खण्डगिरि के नाम से जाना जाता है। यहाँ से प्राप्त शिलालेख और अन्य प्रमाणों से सिद्ध होता है कि यहाँ एक ऐसा युग था जब कलिंग देश में जैनधर्म ही मुख्य धर्म के रूप में मान्य था। जॉन मार्शल के शोध के अनुसार इन पर्वतों पर लगभग 70 गुफायें रहीं होंगी। वर्तमान में उदयगिरि में 28 और खण्डगिरि में 25 गुफायें शेष हैं। यहाँ से प्राप्त सभी प्रतिमायें दिगम्बर जैन परम्परा की हैं।

यहाँ पाँच सौ मुनिराजों ने निर्वाण पद की प्राप्ति की। यहाँ से प्राप्त शिलालेखों में प्राकृत भाषा का प्रयोग किया गया है। जिसमें प्रथम पंक्ति में अर्हन्त एवं सिद्धों को नमस्कार किया गया है। अनेक गुफाओं में जैन धर्म के मंगल चिन्ह अष्ट प्रातिहार्य, स्वस्तिक आदि उत्कीर्ण हैं। खण्डगिरि में जैन तीर्थंकरों की प्रतिमायें प्राप्त हुईं। यहाँ के शिलालेखों से पता चलता है कि सम्राट खारवेल यहाँ के शासक थे जो दिगम्बर जैन थे। उनके राजा बनने के तीन सौ वर्ष पूर्व राजा नन्द राजा तोशाली पर आक्रमण करके भगवान आदिनाथ की प्रतिमा को अपने राज्य मगध ले गये। भगवान आदिनाथ को कलिंग जिन भी कहा जाता है। सम्राट खारवेल मगध के राजा बृहस्पति को हराकर वह प्रतिमा वापस लाये और पुनः उसे विराजमान कराया।

यहाँ भगवान ऋषभदेव और भगवान महावीर का समवशरण भी आया था। भगवान पार्श्वनाथ का भी यहाँ विहार हुआ था। वर्तमान में यहाँ खण्डगिरि पहाड़ पर भव्य जिनमंदिर है। यहाँ कुल तीन वेदियाँ हैं। नीचे तलहटी में भी अत्यंत मनोरम जिनमंदिर है। यहाँ आवास और भोजन की समुचित व्यवस्था है। प्रतिवर्ष मकर संक्रान्ति पर्व पर यहाँ खारवेल उत्सव का दस दिवसीय आयोजन भी होता है। यह उड़ीसा के प्रमुख उत्सवों में से एक है। उदयगिरि जाने के लिये कोलकाता से सीधी बस एवं ट्रेन सुविधा उपलब्ध है। यह तीर्थ भुवनेश्वर रेल्वे स्टेशन से 4 किमी की दूरी पर स्थित है।

संदेश हमारा निर्णय आपका

Food for Thought

KINDER JOY contains Was Coating which is also used in styrofoam containers. That is why Kinder Joy dont stick to each other when eating it. Our body needs upto two days to clean the was. Make sure you stop eating Kinder Joy. This wax can cause CANCER.

ध्यान से देखिये ये मांसाहारी है

आश्चर्य...!
ब्राम्हण परिवार के विवाह के कार्ड में रात्रि भोजन त्याग का संदेश

पांचो पांडवों का वैराग्य

हस्तिनापुर राज्य के लिए कौरवों व पांडवों के मध्य कुरुक्षेत्र में भयंकर युद्ध हुआ था। पांडवों के प्रमुख युधिष्ठिर और कौरवों के दुर्योधन थे। यह युद्ध लम्बे समय तक चला था। अन्त में पांडवों को विजय प्राप्त हुई, कौरवों का सर्वनाश हुआ। विजय के पश्चात् युधिष्ठर को हस्तिनापुर राज्य का राजा बनाया गया। पांडवगण ने हस्तिनापुर राज्य का सुचारु रूप से संचालन किया।

पांडवों के शासन काल में एक भयंकर घटना घटी। द्वारका नगरी अग्नि में जलकर भस्म हो गई। उनके सगे सम्बन्धियों की भी इस अग्निकांड में जलने से मृत्यु हो गई। पांचों पांडवों को इससे गहरा आघात पहुंचा।

पांचों पांडव आत्म शान्ति के लिए अपनी माता कुन्ती तथा महारानी द्रोपदी सहित 22 वें तीर्थंकर नेमिनाथ के समवशरण में गये। वहां पहुंचकर श्रद्धाभक्ति सहित उनको प्रणाम किया। वे स्तुति करने लगे– हे नाथ! आप इस संसार रूपी समुद्र को पार उतारने वाले नौका समान हैं, आप केवलज्ञान द्वारा संसार के अज्ञान को दूर करने वाले हैं, आप कामवासना को जीतने वाले हैं। स्तुति करने के पश्चात् वे सभी धर्मसभा में यथा स्थान बैठ गये।

तत्पश्चात् भगवान नेमिनाथ की दिव्यवाणी में धर्मोपदेश प्रारंभ हुआ। सुख का मुख्य साधन धर्म ही है। छः काय जीवों की रक्षा करना ही दया है । इस तरह मुनि धर्म और श्रावक धर्म का विस्तार से वर्णन

किया। अन्त में पांडवों ने अपने पिछले भवों की जानकारी के लिए भगवान से निवेदन किया। पिछले भवों का वर्णन सुनकर युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, माता कुन्ती, द्रोपदी का हृदय वैराग्य से भर गया। वे सभी कहने लगे कि इतना लम्बा समय सांसारिक भोगों में गुजार दिया। दीक्षा लेने का अब समय आ गया है।

पांचो पांडव वापिस अपने महलों की ओर गये और अपने पुत्रों को राज्य का भार सौंप दिया। तत्पश्चात् पांचों पांडवों ने परिग्रह त्याग, केश लोंच किया और तेरह प्रकार के चारित्र ग्रहण कर जिन दीक्षा ली। इसके साथ–साथ कुन्ती, द्रोपदी, सुभद्रा आदि ने आर्यिका राजमती के समीप जाकर जिन दीक्षा लेकर संयम धारण कर लिया।

विहार करते हुये ये पांडव सौराष्ट्र देश पहुंच गये। वहां के शत्रुंजय पर्वत पर आत्मध्यान में लीन हो गये। दैवयोग से दुर्योधन का भांजा कुमुर्धर वहां पहुंच गया। जो अत्यन्त क्रूर स्वभावी था। जब उसने पांडवों को आत्म लीन देखा तो उसके हृदय में वध करने की भावना जागृत हो गई। उसी समय कुमुर्धर ने लोहे के आभूषण तैयार करवाये। आभूषणों को अग्नि में खूब तपाकर पांचों पांडवों को पहिना दिये। इन पांचों मुनियों का शरीर जलने लगा और धुंआ निकलने लगा। पांचों भाईयों ने जान लिया कि उनका अन्तिम समय है और इस महा भयंकर उपसर्ग को आत्म चिंतवन में एकाग्रचित होकर ध्यान करना चाहिये। युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन को मोक्ष पद मिला। तीनों ने हमेशा के लिये अतुलनीय मोक्ष प्राप्त किया । दो भाई नकुल, सहदेव उपसर्ग सहते हुये सर्वार्थसिद्धि में अहमिन्द्र हुये। जहां से पुनः मनुष्य शरीर धारण कर मोक्ष पद प्राप्त करेंगे।

राजमती, कुन्ती, सुभद्रा एवं द्रौपदी ने भी सन्यास धारण करके अपना शरीर छोडा। वे सभी स्त्री पर्याय को छोड़कर 16 वें स्वर्ग में देव उत्पन्न हुये। ये सभी पुनः मनुष्य भव को प्राप्त कर तप साधना द्वारा कर्मों का नाश कर मोक्ष पद प्राप्त करेंगें।

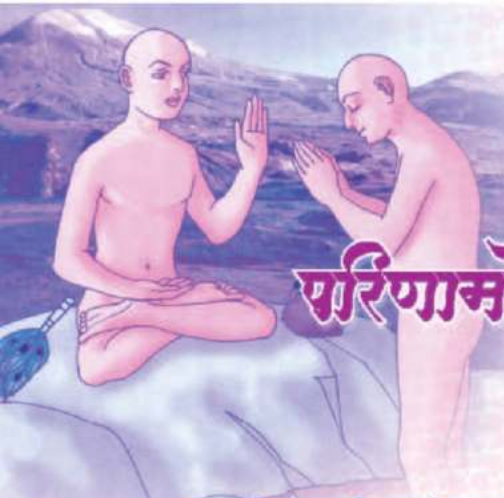

कथा सुनो पुराण की -

परिणामों का फल

अभयकोष काकन्दी नगर के राजा थे। उनकी रानी का नाम अभयमती था। दोनों में परस्पर बहुत प्रेम था। एक दिन अभयकोष राजा घूमने के लिये जंगल की ओर निकले। रास्ते में नाव चलाने वाला मल्लाह एक बड़े और जीवित कछुये के चारों पांव रस्सी से बांधकर और लकड़ी में लटकाकर चला जा रहा था। पापी अभयकोष ने जैसे ही उस कछुये को देखा तो मात्र अपने आनन्द के लिये उस कछुये के चारों पैर काट दिये। मूर्ख लोग न्याय-अन्याय, हिंसा-अहिंसा का जरा भी विवेक नहीं रखते। कछुआ उसी समय तड़प-तड़पकर मर गया। पूर्व में ही आयु बंधने के कारण उस कछुए ने उसी अभयकोष की रानी अभयमती के गर्भ से उसके पुत्र के रूप में जन्म लिया। उसका नाम चण्डवेग रखा गया। समय के साथ चण्डवेग युवा हो गया।

एक राजा अभयकोष चन्द्रग्रहण देख रहे थे, तभी उन्हें विचार आया कि समय कैसे बीता जा रहा है और एक दिन इस जीवन का अन्त हो जायेगा और मैं मूर्ख विषय-भोगों में फंसा रहा और कभी अपने आत्मकल्याण की ओर ध्यान ही नहीं दिया। महान जैन धर्म को पाकर भी मोह-माया में फंसा रहा। अब आत्मकल्याण का समय है। ऐसा विचार कर राजा ने अगले ही दिन अपने पुत्र चण्डवेग को राज्य सौंपकर दिगम्बर दीक्षा अंगीकार कर ली।

इसके बाद अभयकोष आत्मध्यान करने जंगल चले गये और निरन्तर विहार करने लगे। कई वर्षों बाद वे विहार करते-करते काकन्दी नगर की ओर आये। चण्डवेग उसी समय उनके सामने से निकला। कई वर्ष बीत जाने के कारण वह अपने पिता को नहीं पहचान पाया और उसे अपना पूर्व भव याद आ गया और उसने पूर्व बैर के कारण क्रोध में मुनि अभयकोष के दोनों हाथ और पैर काट दिये।

अभयकोष मुनि पर घोर उपसर्ग हुआ, पर वे पर्वत के समान अचल खड़े रहे और आत्मध्यान में लीन रहे। अपनी अपूर्व आत्म साधना के बल पर उन्होंने केवलज्ञान प्राप्त कर लिया और वे कुछ समय के बाद मोक्ष चले गये।

कथा सुनो पुराण की -

उपसर्ग में आराधना

दक्षिण भारत के कुम्भकार नाम के पुराने शहर में राजा दण्डक का शासन था और उनकी पत्नी का नाम सुव्रता था। सुव्रता सुन्दर होने के साथ बहुत ज्ञानवान महिला थी। राजा के मंत्री का नाम बालक था, वह जैन धर्म से बहुत द्वेष रखता था। एक दिन नगर में पाँच सौ मुनिराजों का संघ आया। बालक मंत्री को अपने ज्ञान पर बहुत अभिमान था। वह मुनिराजों से शास्त्र पर बहस करने के लिये उनके आचार्य के पास जा रहा था तभी रास्ते में उसी संघ के खण्डक नाम के मुनिराज रास्ते में ही मिल गये। बालक मंत्री उन्हीं से चर्चा करने लगा। मुनिराज के विशिष्ट ज्ञान और तर्कपूर्ण उत्तर के सामने बालक को अपना अपमान महसूस होने लगा, वह मुनिराज से बहस और झगड़ा करने लगा परन्तु मुनिराज ने अत्यंत शांति से उसके सभी शंकाओं को दूर कर जैनधर्म की सिद्धि की। इससे बालक को और अधिक अपमान और शर्म महसूस हुई। उसने मुनिराजों से इस अपमान का बदला लेने का निश्चय किया।

उसने एक बहरुपिया को (नाटक करने वाला) लोभ देकर मायाचारी से मुनि का रुप रखने को कहा और उसे रानी के पास उनके महल में भेज दिया। वह बहरुपिया मुनि के वेश में रानी से गन्दा मजाक और अशोभनीय व्यवहार करने लगा। इधर बालक मंत्री ने राजा से शिकायत की कि आप जिन दिगम्बर मुनिराजों की इतनी भक्ति करते हैं और इनकी सेवा में दिन-रात लगे रहते हैं वे ही आपकी प्रिय रानी के साथ कितना गन्दा व्यवहार कर रहे हैं। आप स्वयं जाकर देखिये कि वह मुनि रानी के साथ किस तरह शर्मनाक भाषा कह रहे हैं।

राजा ने स्वयं जाकर बहरुपिये मुनि का व्यवहार देखा तो उन्हें बहुत क्रोध आया और स्वयं के विवेक से निर्णय न करके क्रोध में अंधे होकर आदेश दिया कि राज्य में जितने दिगम्बर मुनि हैं सबको घानी में (पुराने समय की तेल निकालने की लकड़ी की मशीन) पेल दिया जाये। बालक मंत्री तो यही चाहता था वह मन ही मन बहुत खुश हुआ। उसे अपने अपमान का बदला लेना था। राजा का आदेश पाते ही बालक मंत्री ने सारे मुनिराजों को पकड़ लिया और उन्हें घानी में डाल दिया। ऐसा भयंकर जानकर मुनिराज अपने स्वभाव में लीन हो गये। इन मुनिराजों ने अधिकांश मुनिराजों ने आत्मध्यान के बल से सकल कर्म का नाश कर सिद्ध अवस्था प्राप्त कर ली और कुछ मुनिराजों ने उच्च स्वर्ग पद की प्राप्ति की। बालक मंत्री को इतने भयंकर पाप का फल नरक आदि दुर्गतियों में भोगना पड़ा उसने भयंकर असहनीय कष्ट सहन किये।

धन्य हैं मुनिराज..... जिन्हें बालक मंत्री पर क्रोध नहीं आया बल्कि उपसर्ग को आत्म आराधना का उत्तम समय समझकर निर्वाण पद की प्राप्ति की।

समवशरण

तीर्थंकर मुनिराज को केवलज्ञान होने पर सौधर्म की आज्ञा से कुबेर विक्रिया द्वारा समवशरण की रचना करता है।

तीर्थंकर के उपदेश देने के स्थान को समवशरण कहते हैं।

समवशरण की रचना पृथ्वी से 5000 धनुष ऊपर आकाश में होती है। जिसमें ऊपर जाने के लिये 20 हजार सीढ़ियाँ होती हैं।

समवशरण का ऐसा अतिशय होता है कि अंधों को दिखने लगता है, बहरों को सुनाई देने लगता है, लंगड़े चलने लगते हैं, गूंगे बोलने लगते हैं।

समवशरण में परस्पर जाति विरोधी जीव जैसे - गाय-शेर, बिल्ली-चूहा अपनी बैर बुद्धि छोड़कर परस्पर मित्र हो जाते हैं।

समवशरण में विराजमान अरहंत का मुख चारों दिशाओं में दिखाई देता है।

समवशरण का विस्तार एक योजन से बारह योजन तक रहता है।

समवशरण में साढ़े बारह करोड़ बाजों की मधुर ध्वनि होती है जिसे सुनने मात्र से भूख-प्यास आदि सभी रोगों की पीड़ा समाप्त हो जाती है।

जहाँ समवशरण की रचना होती है वहाँ छः ऋतुओं के फल-फूल एक साथ फलते हैं।

समवशरण में देवों के द्वारा बनाये गये अशोक वृक्ष को देखकर सभी लोगों का दुःख नष्ट हो जाता है।

समवशरण में बारह सभायें होतीं हैं। पहली सभा में गणधर, मुनिराज, दूसरी सभा में कल्पवासी देवों की देवियाँ, तीसरी सभा में गणिनी

सहित आर्यिकायें और स्त्रियाँ, चौथी सभा में चक्रवर्ती सहित मनुष्य, पाँचवी सभा में ज्योतिषी देवों की देवियाँ, छठवीं सभा में व्यंतर देवों की देवियाँ, सातवीं सभा में भवनवासी देवों की देवियाँ, आठवीं सभा में भवनवासी देव, नवमी सभा में व्यंतर देव, दसवीं सभा में ज्योतिषी देव, ग्यारहवीं सभा में कल्पवासी देव और बारहवीं सभा में सभी तिर्यन्च बैठते हैं।

समवशरण के मध्य स्थान को गंधकुटी कहते हैं। गंधकुटी के मध्य भाग में पादपीठ सहित सिंहासन होता है जिस पर भगवान चार अंगुल ऊपर आकाश में स्थित रहते हैं।

भगवान के पीछे एक भामण्डल होता है जिसमें देखने पर तीन भूतकाल के, तीन भविष्य के और एक वर्तमान का भव इस तरह कुल 7 भव दिखाई देते हैं।

समवशरण में सभी जीवों को अपनी-अपनी भाषा में दिव्यध्वनि सुनाई देती है।

समवशरण में तीव्र रुचि वाले भव्य जीव ही भगवान की वाणी सुनते हैं, तीव्र मिथ्यादृष्टि और अभव्य जीव समवशरण के बाहर नाट्य शालाओं, देवियों के नृत्य, बागों की सुन्दरता में ही उलझकर रहे जाते हैं।

समवशरण में भगवान के दर्शन और वाणी के निमित्त से अनेक जीव सम्यग्दर्शन प्राप्त करते हैं, अनेक जीव दिगम्बर दीक्षा अंगीकार कर केवलज्ञान प्राप्त करते हैं और उनमें से कई जीवों को निर्वाण की प्राप्ति हो जाती है।

कविता

नई लगन से काम करेंगे, जीवन में उत्साह भरेंगे।
आलस में नहीं समय बितायें, पास परीक्षा भी कर जायें।।
कितने भी संकट आ जायें, अपने कदम न रुकने पायें।
सत्य बोलना धर्म हमारा, गुरु आज्ञा है कर्म हमारा।।
दूर बुराई से रहना है, सबसे प्रिय यह गहना है।
माता-पिता गुरु पूज्य हमारे, जिनके नयनों के हम तारे।।
सदा बड़ो का आदर, उनकी आज्ञा सिर पर रखना।
पढ़ लिखकर गुणवान बनेंगे, अपने धर्म की शान रखेंगे।
षट् आवश्यक पालें हम सब, न्याय नीति से जियें सभी अब।
परमेष्ठी गुणगान करेंगे, सकल कर्म का नाश करेंगे।।
सिद्ध परम पद लक्ष्य हमारा, वहीं सदा विश्राम करेंगे।।

हमारे गौरवशाली ऐतिहासिक महापुरुष

अमर शहीद अमरचन्दजी बांठिया

भारत के स्वाधीनता संग्राम में देश के अनेक क्रान्तिकारियों के साथ जैन समाज के अनेक श्रावकों ने भी अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। उनमें से एक हैं सेठ अमरचन्दजी। सेठ अमरचन्दजी मूलरूप से बीकानेर (राज.) के निवासी थे। व्यापार के कारण वे अपने पिता श्री अबीरचन्दजी के साथ ग्वालियर आकर बस गये। जैन धर्म के सिद्धान्तों पर अगाध श्रद्धान रखने वाले और आचरण का पालन करने वाले सेठ अमरचन्दजी अपनी सज्जनता, ईमानदारी और परिश्रम के कारण पूरे नगर में सम्मान के पात्र हो गये थे। इससे प्रभावित होकर ग्वालियर राजघराने ने इन्हें नगर सेठ की उपाधि देकर राजघराने के सदस्यों के समान पैर में सोने का कड़ा पहनने का अधिकार दिया। उस समय मात्र राजघराने के सदस्यों को ही पैर में सोने के कड़े पहनने का अधिकार था। बाद में उन्हें ग्वालियर राजघराने के राजकोष का प्रभारी नियुक्त किया गया।

अमरचन्दजी धर्मप्रेमी तो थे ही वे नियमित जिनमंदिर जाते थे। 1855 में एक सन्त चातुर्मास के लिये पधारे, उनके प्रवचनों से प्रभावित होकर वे विदेशी राज्य और विदेशी वस्तुओं के खिलाफ हो गये। 1857 की क्रान्ति में अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने वाले क्रान्तिकारियों को उन्होंने राजकोष का सारा धन और अपनी पैतृक सम्पत्ति दे दी। उनका मानना था कि राजकोष जनता की भलाई के लिये जनता से ही लिया गया है इसलिये इसे अंग्रेजों से मुक्ति के लिये उन्हें राजकोष सौंपना गलत कार्य नहीं है। इस समय ग्वालियर राजघराना अंग्रेजों के साथ था और अंग्रेजों ने सेठजी को राजद्रोही घोषित कर गिरफ्तार करने का आदेश दे दिया। सेठजी छिपते हुये भी क्रान्तिकारियों का सहयोग करते रहे। आखिरकार एक दिन वे पकड़े गये और उन पर मुकदमा चलाकर उन्हें जेल भेज दिया गया।

जेल में सेठ जी भयंकर कष्ट दिये गये। मुर्गा बनाना, पेड़ से उल्टा लटकाकर उन्हें हंटर मारना, हाथ-पैर बांधकर चारों ओर से खींचना, मूत्र पिलाने जैसे अमानवीय अत्याचार किये गये। अंग्रेज चाहते थे कि वे सरकार से माफी मांग लें परन्तु सेठजी इसके लिये तैयार नहीं हुये। अंग्रेजों ने उनके आठ वर्ष के पुत्र को पकड़ लिया और सेठजी को धमकी दी कि यदि तुमने माफी नहीं मांगी तो तुम्हारे पुत्र को मार

दिया जायेगा। इस पर भी सेठ जी नहीं माने तो उनके पुत्र को उनके सामने ही तोप के मुंह पर बांधकर बम से उड़ा दिया गया। बच्चे के शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो गया। इतने पर भी अंग्रेजों का मन नहीं भरा और क्षेत्र की जनता में आतंक फैलाने के लिये सबके सामने फांसी देने का निर्णय किया। सेठजी अपने शरीर का मोह छोड़ चुके थे। उनकी अंतिम इच्छा पूछने पर उन्होंने नवकार मंत्र पढ़ने की अनुमति मांगी और फांसी वाली रात्रि को वे रात भर णमोकार मंत्र का जाप करते रहे। 22 जून 1858 को उन्हें फांसी पर लटकाया गया। परन्तु आश्चर्यजनक रूप से रस्सी टूट गई। दूसरी बार उन्हें पेड़ की शाखा पर लटकाया गया तो शाखा टूट गई। तीसरी बार नीम के पेड़ की मजबूत शाखा पर उन्हें फांसी पर लटका दिया गया और शव को तीन दिन तक वहीं लटका रहने दिया।

ग्वालियर में आज भी वह नीम का पेड़ है और प्रतिवर्ष 22 जून को बड़ी संख्या में लोग आकर उन्हें श्रद्धांजलि देते हैं और उनके योगदान को याद करते हैं।

जबलपुर में अष्टान्हिका महापर्व सम्पन्न

जबलपुर के श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर में आषाढ़ माह का अष्टान्हिका महापर्व सानन्द संपन्न हुआ। दिनांक 1 जुलाई से 8 जुलाई तक आयोजित इस महापर्व पर श्री नियमसार मण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधान की सम्पूर्ण विधि श्री विराग शास्त्री द्वारा श्री प्रशांत जैन, श्री अजित जैन, श्री राजीव जैन के सहयोग से सम्पन्न कराई गई। इस अवसर पर ग्वालियर से पधारे वरिष्ठ विद्वान पण्डित श्री महेशचन्दजी के दोनों समय प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। विधान के मुख्य आमंत्रणकर्ता के रूप में श्री अशोकजी संघी परिवार, जबलपुर ने लाभ लिया।

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर को आगामी गतिविधियों में प्राप्त सहयोग

5000/- पण्डित श्री गुलाबचन्दजी जैन, बीना
5000/- श्रीमति दिशा जैन, नागपुर
2100/- श्रीमति प्रियंका जैन, कोलकाता
1100/- ब्र.पण्डित श्री मनोजजी जैन, जबलपुर

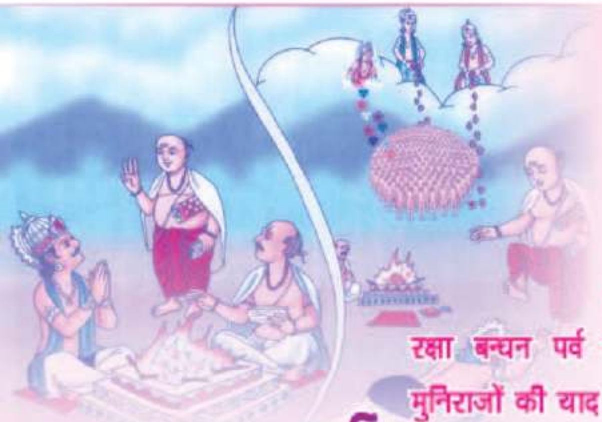

वात्सल्य पर्व

रक्षाबंधन अवसर पर इसका सामूहिक पाठन कर सकते है।

दोहा

रक्षा बन्धन पर्व यह, देता शुभ संदेश ।
मुनिराजों की याद कर, हरो कर्म का वेश ।।

(मानव)

जय जय मुनिजराज हमारे, हैं जिनशासन रखवारे ।
सब जग निःस्सार बताये, निज अनुपम सौख्य जताये।।
आचार्य अकम्पन स्वामी, इस भू पर सहज विचरते ।
मुनि संग सात सौ निस्पृह, मुक्ति दर्पण को लखते ।
सब मुनिवर आत्म विहारी, चैतन्य रसामृत पीते ।
जड़ निधियाँ सारी त्यागीं, आतम निधि से ही जीते ।।
फिर नगर हस्तिनापुर में, मुनि संघ सात सौ आया ।
बलि आदि मंत्री चित में, पूरब का बैर था जागा ।।
नृप से मांगा तब नृप पद, उपसर्ग किये बहु भारी ।
कैसे उपसर्ग कहूँ मैं, जिव्हा मेरी थक जाती ।।
वह सावन मास समय था, रिमझिम वर्षा भी होती ।
शीतल बयार भी चलती, बिजली भी कड़कती ।।
वहाँ यज्ञ रचाये बलि ने, वहाँ घास हरी भी उगा दी ।
पर मुनि नहीं घबराये, अपनी धुनि वहीं रमा दी ।।
देखो मुनि की समता को, वह समता नहीं है हममें ।
यदि हो प्रतिकूल व्यवस्था, हम घबरा जाते क्षण में ।।
ये ही सावन के दिन थे, क्यों मुनिवर याद न आते ।
था मुनिराजों पर संकट, हम लोक सम्बन्ध बढ़ाते ।।
कोई कहता सीजन आया, कोई कहता बहना आई ।
कोई बहन कहीं पर रूठी, भैया ने सुधि बिसराई ।।
आओ संकल्प करें हम, मुनिवर को याद करेंगे ।
जिनशासन रहे सुरक्षित, ऐसा शुभ भाव धरेंगे ।।

रचनाकार
विराग शास्त्री

चहकती चेतना

अब नहीं भूलूँगी

राखी बहुत खुश थी। रक्षाबन्धन का पर्व आने वाला था। उसका भाई अचल जयपुर के जैन विद्यालय में पढ़ाई करने गया था, उसे वहाँ पढ़ाई करते हुये अभी 3 माह ही हुये थे परन्तु 3 माह में धर्म की बहुत सारी बातें जानने लगा था। रक्षाबन्धन पर वह छुट्टी लेकर चार दिन के लिये आज घर आ रहा था। राखी अपने भाई के घर पर आने का सुबह से इन्तजार कर रही थी। जैसे ही राखी ने घर के सामने आटो के आने की आवाज सुनी तो वह भागती हुई घर के बाहर गई और अचल से लिपट गई आखिर उसका भाई 3 माह के बाद घर आया था। अचल स्नान आदि करके जिनमंदिर गया। वापस आकर राखी से बातें करने लगा। राखी बोली - अचल भैया ! इस बार रक्षाबन्धन पर हम बहुत मजे करेंगे।

अचल बोला - अच्छा! क्या मजे करेंगे ? क्या प्लान है तुम्हारा? राखी चहकते हुये बोली - अरे! सबसे पहले मैं सुबह आपको राखी बांधूंगी। फिर आप मुझे अच्छा सा गिफ्ट देना। फिर हम दोनों घूमने जायेंगे, पार्क जायेंगे और बाहर होटल में खाना खायेंगे और..... और रहने दे राखी .... अचल ने टोकते हुये बोला। क्यों भैया! मेरा प्लान पसन्द नहीं आया क्या । अचल ने समझाते हुये कहा - पसन्द की बात बाद में। पहले ये बता कि रक्षाबन्धन पर्व हम क्यों मनाते हैं?

ताकि भाई और बहन के स्नेह को मजबूती मिले और हर समस्या में दोनों साथ रहें। - राखी ने तुरन्त चहकते हुये कहा।

नहीं पगली। ऐसा नहीं है। पहली बात - यह पर्व भाई-बहन का नहीं बल्कि दिगम्बर आचार्य अकम्पन आदि 700 मुनिराजों पर उपसर्ग दूर होने की खुशी में मनाया जाने वाला पर्व है। और यह पर्व मात्र भाई-बहन का ही नहीं बल्कि सभी श्रावकों का है।

बड़ी ज्ञान की बातें करने लगे हो भैया... राखी मुंह बनाते हुये बोली।

बुरा मत मानो मेरी बहना! अरे हमें तो रक्षाबन्धन के 7 दिन पहले से ही दिगम्बर मुनिराजों पर उपसर्ग याद कर अपनी कोई प्रिय वस्तु का 7 दिन के लिये त्याग करना चाहिये और भावना भाना चाहिये कि हमारे दिगम्बर मुनिराजों पर कोई संकट न आये और .... पर भैया! इसमें राखी बांधने बात कहाँ से आ गई ... राखी ने जिज्ञासा से टोकते हुये पूछा। बहन द्वारा भाई को राखी बांधने की परम्परा हमारी परम्परा नहीं है और क्या भाई-बहन के पवित्र सम्बन्धों का यह राखी का धागा होगा क्या ....? -अचल ने समझाते हुये कहा। राखी बोली - बात तो आपकी सही है.... ।

तो मेरी प्यारी बहना! हम रक्षाबन्धन पर जिनमंदिर जायेंगे और मुनिराजों की पूजा करेंगे और मुनिराजों के आहार के समय के बाद ही कुछ खायेंगे। अपने पास के तीर्थ क्षेत्र की वन्दना करने जायेंगे।बाजार की कोई भी चीज नहीं खायेंगे । और हाँ! तुम मुझे राखी जरूर बांधना और पर जिनधर्म की रक्षा के लिये। हम दोनों कोई ऐसा नियम लेंगे जिससे हमारा जीवन मंगलमय हो।

बिल्कुल भैया! आप तो पूरे पण्डित हो गये हो और मैं यह पर्व कभी नहीं भूलूंगी - राखी ने हंसते हुये कहा।

कर्मन की गति न्यारी-न्यारी

एक ही परिवार के 28 सदस्य एक ही शक्ल के

अपराध का फल आँख में बीमारी

गुटखा खाने का फल – कैंसर

चार्जिंग के समय मोबाईल से बात करने की लापरवाही

सावधान

ऐसा होता है पत्ता गोभी का खतरनाक कीड़ा

नीचे दी फोटो को ध्यान से देखिये।
पत्ता गोभी में पाया जाने वाला यह कीडा कितना खतरनाक है।

**और अनेक बीमारियाँ पैदा करते है,
जो कि प्राणघातक हो सकती हैं
इसलिये गोभी का
पूर्णतः त्याग करना चाहिये ।**

TIME/PERIOD	MONDAY	TUESDAY	WEDNESDAY	THURSDAY	FRIDAY	SATURDAY

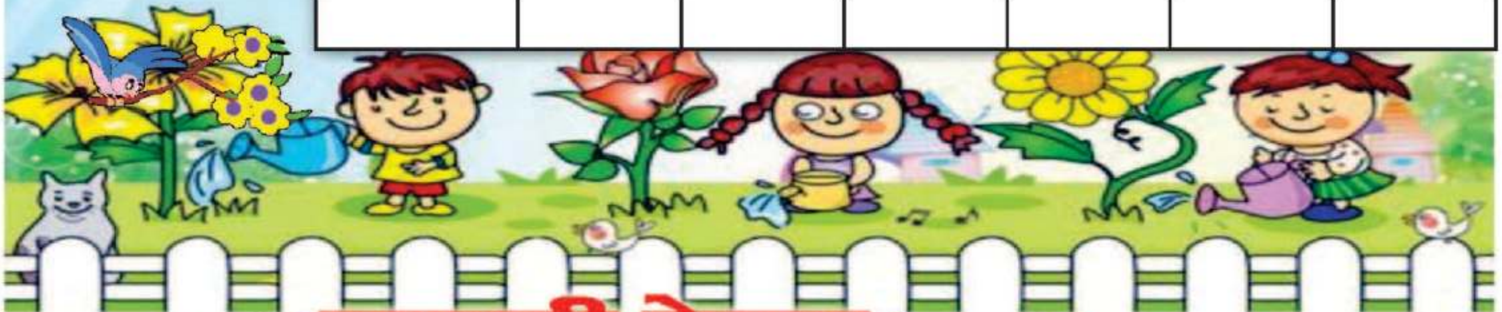

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका **चहकती चेतना** के सदस्य बनिये। संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, लाल स्कूल के पास, फूटाताल, जबलपुर - 482 002 मध्यप्रदेश मोबा. 9300642434 ई-मेल : chehaktichetna@yahoo.com

जन्म-मरण के अभाव की भावना में
जन्म दिवस मनाने की सार्थकता है।

जन्म दिवस की मंगल शुभकामनायें

अर्हम् अर्हम् में छिपे श्री जिनेन्द्र भगवंत ।
यही भावना जन्म दिवस पर काटो भव के फंद ।।

अर्हम् अनिल जैन, मुम्बई

नर जीवन उपहार सम, करना ऐसा काम।
शुभ कामों में चित्त धर, सचित बनो महान।।

सचित कान्ति जैन, दुर्ग 16 जुलाई

स्वयं रचित यह विश्व है, अपने में ही लीन।
भोंगे सारे जीव ही, अपने ही परिणाम।।

रचित कान्ति जैन, दुर्ग 19 जुलाई

आत्मज्ञान की लब्धि हो, पूरे हों सब अर्थ।
सीता सा साहस धरो, यही रहे सिद्धार्थ।।

लब्धि सिद्धार्थ शाह, आणंद गुज. 25 जुलाई

मानुष कुल उत्तम धर्म मिला सुखद परिवार ।
ब्रज मधु मोनिल अरु रवि रीता उपहार ।
हो निशांत परिणाम सब होवे ऐसा काम ।
भाविका पुत्री नाम समाया पाना निज का धाम ।

समाया निशांत कोठारी, कांदीवली मुंबई 23 जुलाई

हथाया परिवार की ओर से समाया को उसके जन्मदिवस पर मंगल शुभकामनायें

वैरागी हाथी

लंका के राजा रावण के सबसे प्रधान हाथी का नाम त्रिलोकमंडन था। राजा रावण ने सम्मेदशिखर के मधुबन में से इसको पकड़ा था।

बाद में तो श्रीराम और रावण के बीच बड़ी लड़ाई हुई, रावण मारा गया। राजा राम जीते और त्रिलोकमंडन हाथी को लेकर सब अयोध्या आए। यह हाथी बड़ा समझदार और चतुर था।

भरत को यह हाथी बहुत प्यारा था और इस हाथी को भी भरत से बहुत प्यार था। एक बार यह हाथी क्रोधित होकर भागा तो सर्वत्र हाहाकार मच गया, परन्तु भरत को देखते ही वह देखते ही वह शान्त हो गया, हाथी को पूर्वभव याद आया, भरत ने उसे वैराग्य का उपदेश दिया।

एक बार देशभूषण और कुलभूषण नाम के दो केवली भगवंत अयोध्या आये। श्रीरामचन्द्र, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न त्रिलोकमण्डन हाथी पर बैठकर उनके दर्शन करने गए। भगवंतों को देखकर चारों ही प्रसन्न हो गए, हाथी भी खुश हुआ। वहाँ भगवान का उपदेश सुनकर भरत ने तो दीक्षा लेली। हाथी को भी वैराग्य हो गया और उसने सम्यग्दर्शन के साथ व्रत अंगीकार कर लिए। पन्द्रह–पन्द्रह उपवास किए। इस वैरागी हाथी को व्रती जानकर नगरजनों ने भक्तिपूर्वक भोजन कराया।

हाथी जैसा प्राणी भी कितना धर्मसाधन कर सकता है, तो क्या हीं करना चाहिये।

विनय

एक बार नदी को अपने पानी के प्रचंड प्रवाह पर घमंड हो गया। नदी को लगा कि मुझमें इतनी ताकत है कि मैं पहाड़, मकान, पेड़, आदि सभी को बहाकर ले जा सकती हूँ। एक दिन नदी ने घमंड में समुद्र से कहा - बताओ! मैं तुम्हारे क्या-क्या लाऊँ ? मकान,पशु, पेड़ क्या चाहिये ? जो तुम चाहोगे मैं बहाकर तुम्हारे पास ले आऊँगी। समुद्र समझ गया कि नदी को अपने पानी के बहाव पर घमंड हो गया है। उसने कहा कि हे नदी! तुम बहुत शक्तिमान हो। यदि तुम लाना ही चाहती हो तो मेरे लिये थोड़ी सी घास ला दो। नदी ने कहा - बस इतनी सी बात। अभी लेकर आती हूँ। नदी ने अपने पानी से पूरी ताकत लाई परन्तु घास को नहीं उखाड़ सकी। नदी ने कई बाद प्रयास किया परन्तु उसे सफलता नहीं मिली। वह थककर समुद्र के पास पहुँची और बोली - मैं पेड़, मकान आदि सब कुछ उखाड़ सकती हूँ परन्तु जब भी घास उखाड़ने गई तो घास तुरन्त नीचे हो जाती है और मैं खाली हाथ रह जाती हूँ।

समुद्र ने नदी की बात सुनकर कहा - जो व्यक्ति पहाड़ और पेड़ जैसे कठोर और मानी होते हैं वे जल्दी उखड़ जाते हैं परन्तु जिनमें घास जैसी विनम्रता होती है उनका भयंकर आंधी और तूफान भी कुछ नहीं बिगाड़ सकते। इसलिये हमें कभी घमंड नहीं करना चाहिये।

अर्थात् विनय वह गुण है जो हर समस्या में हमारी रक्षा करता है।

पाठशाला खोलो अभियान

आइये हम सभी
अपने बच्चों को
पाठशाला भेजना शुरु करें

Lets start getting our children interested
towards Jain Dharm and Start Sending to Jain Pathshala

यदि पाठशाला प्रारंभ करने में कोई परेशानी आपके समक्ष है तो संपर्क करें

अपनी पाठशाला की जानकारी दीजिये और पाइये
घर बैठे मंगल उपहार www.jainintergation.com/win-a-gift/

website : jainintergation.com, E-mail :join.pka@gmail.com
facebook.com/join.pka, Whatsapp : 8826015015
फोन : 8826015015

हमारा इतिहास-

इथोपिया में जिनधर्म के अवशेष

अनेक प्रमाणों से स्पष्ट होता रहा है कि हमारा गौरवशाली जैन धर्म विश्व के अनेक देशों में प्रचलित था। चीन, तिब्बत, ईराक, ईरान और फिलिस्तीन, पश्चिमी एशिया, मिस्र, यूनान, सूडान, एबीसिनिया जैसे देशों में ईसा मसीह के पूर्व ही जैन धर्म प्रचलित था। इन देशों के पहाड़ों और जंगलों मे अनगिनत दिगम्बर साधु आत्मसाधना करते थे। इथोपिया में एक समानिया सम्प्रदाय प्रचलित है जो कि श्रमण शब्द का अपभ्रंश का दूसरा रूप है। इथोपिया के अल्माका नगर में एक अल्माका मंदिर है इसमें एक प्राचीन वेदी है। वेदी खाली है उसमें किसी तीर्थंकर की मूर्ति नहीं है। परन्तु स्थान को देखकर लगता है कि यह किसी जैन तीर्थंकर की प्रतिमा का स्थान है। वेदी में अभिषेक का जल निकालने के लिये एक नाली भी बनाई गई है। वेदी के चारों ओर प्राचीन लिपि में जिनमंदिर और वेदी के तथ्य लिखे हुये हैं। इथोपिया के ही येहा शहर में एक मून टेम्पल है। जिसकी विशाल दीवारें हैं। मंदिर में तीन जगह चन्द्र का चिन्ह है। प्राप्त इतिहास के अनुसार यहाँ भगवान चन्द्रप्रभ की लगभग 55 फुट की प्रतिमा विराजमान रही होगी। मंदिर के सामने एक राजा का पुराना महल है जिससे लगता है कि यहाँ का राजा भी जैन रहा होगा। अब इस मून मंदिर को चर्च में बदल दिया गया है।

येहा के पास ऑब्ज्यूम है। यहाँ प्राचीनकाल की गुफायें हैं। ये गुफायें यू आकार की हैं। ये भारत की उदयगिरि-खण्डगिरि की तरह की गुफायें हैं। ये संभवतः दिगम्बर मुनिराजों के तप करने और लेटने का स्थान था।

गोकुलचन्द जी जैन द्वारा लिखित पुस्तक विदेशों में जैन धर्म में प्रमाण सहित उल्लेख है कि अबीसीनिया और इथोपिया में दिगम्बर जैन मुनि विहार करते थे और धर्म का प्रचार किया करते थे। अफ्रीका में प्राचीनकाल में जैन धर्म ही था। श्रीलंका की राजधानी कोलम्बो का पूर्व नाम अनुराधापुरम् था। यह जैन राजा की राजधानी था।

इथोपिया में भारतीय संस्कृति का इतना प्रभाव है कि यहाँ के लोग उपवास को महत्व देते हैं और उपवास के समय में दिन में केवल एक बार शाकाहारी भोजन करते हैं। इन दिनों दूध और दूध से बनी चीजों का भी प्रयोग नहीं करते।

- पुण्य उदय में साधन व्यक्ति के पीछे भागते हैं और पाप उदय में व्यक्ति साधनों के पीछे भागता है। पर्याय की प्रीत, दुःख का संगीत।

हमारे मुनिराज

1. वे कौन से मुनिराज थे जिन्हें आम के वृक्ष का सूखा तना देखकर वैराग्य हो गया था ?

उत्तर– द्वीपायन मुनिराज को।

2. वे कौन से मुनिराज थे जिन्हें शौरीपुर में केवलज्ञान हुआ था ?

उत्तर– श्री अलस कुमार मुनिराज।

3. वे कौन से मुनिराज थे जिन्होंने राजा भोज की सभा में सैकड़ों विद्वानों को परास्त कर दिया था ?

उत्तर– श्री शान्तिसेन महाराज।

4. वे कौन से मुनिराज थे जिन्हें आचार्य मानतुंग ने अपना आचार्य पद सौंपा था ?

उत्तर– श्री गुणाकर महाराज।

5. वे कौन से मुनिराज थे जिनके गले में 4 दिन तक मरा हुआ सर्प पड़ा रहा ?

उत्तर– मुनि यशोधर

6. वे कौन से मुनिराज थे जिनका सीता ने पूर्व भव में अपमान किया था ?

उत्तर– श्री सुदर्शन मुनि।

7. वे कौन से मुनिराज थे जिन पर 7 दिन तक उपसर्ग हुआ था ?

उत्तर– मुनि पार्श्वनाथ।

8. वे कौन से मुनिराज थे जिन्हें भगवान नेमिनाथ प्रथम दर्शन करके वैराग्य हो गया था ?

उत्तर– श्री गजकुमार मुनिराज।

9. वे कौन से मुनिराज थे जिनसे अंजन चोर ने मुनि दीक्षा ली थी ?

उत्तर– श्री देवर्षि मुनिराज।

10. वे कौन से मुनिराज थे जिन्हें भगवान आदिनाथ के प्रथम उपदेश से वैराग्य हो था ?

उत्तर– श्री वृषभसेन मुनिराज।

11. वे कौन से मुनिराज थे जिनके उपदेश से पटना का राजा धात्रीवाहन मुनिराज बन गया ?

उत्तर– श्री शिवभूषण मुनिराज।

12. वे कौन से मुनिराज थे जिनसे दु:शासन ने दीक्षा ली थी ?

उत्तर– विदुर मुनिराज।

13. वे कौन से मुनिराज थे जो गोपाचल पर्वत (ग्वालियर) से मोक्ष पधारे ?

उत्तर– सुप्रतिष्ठ केवली।

13. वे कौन से मुनिराज थे जिनके उपदेश सुनकर चाणक्य को वैराग्य हो गया ?

उत्तर– श्री महीधर मुनिराज।

14. वे कौन से मुनिराज हैं जो पंचम काल के अंत में मुनिराज होंगे ?

उत्तर– श्री वीरांगज मुनिराजजी।

15. वे कौन से मुनिराज थे जिन्हें अपनी मृत्यु के आठ दिन पहले वैराग्य हो गया था ?

उत्तर– श्री चिलाल मुनिराज।

संकलन – पं. श्रेयांस शास्त्री, जबलपुर

हमारे गौरवशाली महापुरुष -

सेठ लक्ष्मीचन्दजी

जयपुर राज्य के मालपुरा गांव के साधारण जैन श्रावक जिनदास के दो पुत्र थे। फतहचन्द और मनीराम। मनीराम आजीविका की तलाश में दूसरे गांव जा रहे थे। रास्ते में उन्हें एक व्यक्ति बहुत बीमारी की हालत में मिला। मनीराम ने उनकी रास्ते में ही सेवा की और उन्हें उचित स्थान पर पहुँचाया। मनीराम की सेवा से वह व्यक्ति मौत से बच गया। वे व्यक्ति ग्वालियर राजघराने के सिन्धिया परिवार द्वारा सम्मान प्राप्त प्रतिष्ठित सेठ राधामोहनजी पारिख थे। उनके स्वार्थी नौकर उनका सारा माल लेकर उन्हें बुरी हालत में छोड़कर भाग गये थे।

राधामोहनजी ने मनीराम का उपकार मानते हुये उन्हें ग्वालियर बुला लिया और उन्हें कपड़े के व्यवसाय में लगा दिया। ग्वालियर राजघराने की रानी बैजाबाई के आदेश से राधामोहनजी द्वारकाधीश श्रीकृष्ण का मंदिर बनाने मथुरा आ गये और साथ में मनीराम को भी ले आये। उन्होंने सारा काम मनीराम के जिम्मे छोड़कर स्वयं श्रीकृष्ण की भक्ति में रम गये। बाद में सेठ मनीराम ने जम्बूस्वामी का जिनमंदिर भी बनवाया। 1825 में सेठ मनीराम ने प्रसिद्ध विद्वान और छहढ़ाला के रचनाकार पण्डित श्री दौलतरामजी अपने पास रखा। राधामोहनजी की कोई संतान नहीं थी, उन्होंने मनीरामजी के बड़े पुत्र लक्ष्मीचन्द को अपनी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बनाया। सेठ लक्ष्मीचन्दजी ने भी राधामोहनजी की भावना अनुसार व्यापार को सम्भाला और अनेक परोपकार के कार्य किये। अंग्रेज अफसर भी सेठ लक्ष्मीचन्दजी का बहुत सन्मान करते थे। अनेक बार उन्होंने मथुरा की जनता की अंग्रेजों के अत्याचारों से रक्षा की। सेठ लक्ष्मीचन्दजी स्वयं जैन धर्म के दृढ़ श्रद्धानी थे परन्तु उनके छोटे भाई राधाकिशन और गोविन्ददास ब्राह्मण साधुओं के भक्त थे। इन भाईयों ने वृन्दावन में रंगजी का विशाल मंदिर बनवाया और सेठ लक्ष्मीचन्दजी के पुत्र सेठ रघुनाथजी भी जैनधर्म में श्रद्धा रखते थे। इन्होंने चौरासी के मंदिर में भगवान अजितनाथ की प्रतिमा विराजमान करवाई और चौरासी क्षेत्र पर प्रतिवर्ष जिनेन्द्र रथयात्रा का आठ दिवसीय कार्यक्रम भी प्रारम्भ कराया।

ऐसे अनेक श्रेष्ठी श्रावकों ने जिनधर्म के उत्थान में
अपना योगदान दिया।

धार्मिक कवितायें

चन्दा मामा

आसमान में चंदा मामा।
मामा मेरे घर भी आना।
तेरे ऊपर हैं जिनमंदिर,
जिनवाणी माँ का है कहना।

चिड़िया

चिड़िया सुन ले कुट-कुट-कुट,
तू भी खा ले ये बिस्कुट।
भूख लगी है खा ले तू, खाकर ही उड़ जाना तू।
बिस्किट मैं ना खाती हूँ, दाना पानी लेती हूँ।
बिस्किट हैं बाजार के, घर में बनाओ प्यार से।
बड़े प्यार खाऊँगी, वरना भूखी रह जाऊँगी।

रचनाकार - विराग शास्त्री

चहकती चेतना के सदस्य ध्यान दें

चहकती चेतना के सदस्य क्रमांक 2317 से 2400 तक के की सदस्यता अवधि समाप्त हो गई है अतः उन्हें पत्रिका आगे भेजना संभव नहीं होगा। साथ ही सदस्य क्रमांक 2101 से 2316 तक की सदस्यता अवधि शीघ्र समाप्त होने वाली है। अतः पत्रिका प्राप्त करने के इच्छुक साधर्मी सदस्यता राशि हमारे बैंक खाते में जमा करके अथवा चैक या ड्राफ्ट द्वारा भेजें।

बैंक का नाम - पंजाब नेशनल बैंक, शाखा - फव्वारा चौक, जबलपुर

बचत खाता क्रमांक - 1937001010106 IFSC PUNB0193700

सदस्यता शुल्क - 400/- रु. तीन वर्ष हेतु 1200/- रु. दस वर्ष हेतु राशि जमा करके अपना सदस्यता क्रमांक अथवा अपना पूरा पता हमें 9300642434 पर SMS या What's App करें।

नागपुर में बाल संस्कार शिविर संपन्न

यहाँ नेहरु पुतला स्थित श्री महावीर विद्या निकेतन परिसर में दिनांक 28 मई से 5 जून तक बाल संस्कार शिविर का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस शिविर में विराग शास्त्री जबलपुर, विनीत शास्त्री नागपुर, आशीष शास्त्री टीकमगढ़ आदि अनेक शास्त्री विद्वानों ने अध्यापन कार्य किया । प्रतिदिन प्रातः स्थानीय विद्वान पण्डित विपिन शास्त्री और कोल्हापुर से पधारे पण्डित प्रसन्न शेट्टे शास्त्री के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संयोजन पण्डित सुदर्शन शास्त्री द्वारा किया गया।

शाहगढ़ में प्रथम बाल संस्कार शिविर संपन्न

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाहगढ़ द्वारा उत्कृष्ट विद्यालय परिसर में दिनांक 8 जून से 13 जून तक बाल संस्कार शिविर का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस शिविर में विराग शास्त्री जबलपुर, अंकित शास्त्री, सचिन शास्त्री सागर आदि शास्त्री विद्वानों द्वारा ने अध्यापन कार्य किया गया। प्रथम तीन दिन प्रातः और रात्रि में विराग शास्त्री के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का सफल संयोजन पण्डित माधव शास्त्री और अमित शास्त्री अरिहन्त मांवरा द्वारा किया गया।

सभी स्थानों पर जिनेन्द्र पूजन प्रशिक्षण, बालबोध आदि की कक्षाओं, संगीतमय कथा के आयोजन के साथ प्रोजेक्टर पर खान-पान में सावधानी, नैतिकता सम्बन्धी वीडियो का प्रदर्शन किया गया।

करहल में महावीर जयन्ती सम्पन्न

आगरा के पास करहल नगर में महावीर जयन्ती का आयोजन भव्य शोभायात्रा पूर्वक हुआ।

द्विदिवसीय कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रथम दिन जन्म कल्याणक की शोभायात्रा का आयोजन हुआ। इन्द्र सभा का प्रभावी संचालन विराग शास्त्री ने किया । रात्रि में गायक रुपेशकुमार द्वारा भजन संध्या हुई। दूसरे दिन प्रातः भगवान महावीर पंचकल्याणक विधान का मधुरिम आयोजन पण्डित संजय शास्त्री और श्री विराग शास्त्री के नेतृत्व में किया गया। कार्यक्रम में समाज के कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त श्री संदीप शास्त्री का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

गौरझामर में हुआ वेदी का शिलान्यास

सागर जिले के गौरझामर में दिनांक 14 अप्रेल से 16 अप्रेल तक जिनमंदिर में वेदी शिलान्यास महोत्सव का आयोजन हुआ। इस अवसर पर पण्डित संजीव गोधा एवं श्री विराग शास्त्री के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण विधि विधान ब्र. नन्हेभाई सागर द्वारा संपन्न कराये गये।

खड़ैरी में जिनमंदिर का शिलान्यास

सागर जिले के खड़ैरी ग्राम में दिनांक 19 अप्रेल से 21 अप्रेल तक जिनमंदिर का भव्य शिलान्यास महोत्सव संपन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित संजीव गोधा के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण विधि विधान बाल ब्र. जतीशभाई के निर्देशन में विराग शास्त्री जबलपुर द्वारा अशोकजी उज्जैन, श्री सम्मेदजी जैन के सहयोग से संपन्न कराये गये।

ग्वालियर में गुरुवाणी मन्थन शिविर का सफल आयोजन

मध्यप्रदेश के ग्वालियर में दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ग्रेटर नोएडा द्वारा आध्यात्मिक सत्पुरुष कानजी स्वामी की जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में गुरुवाणी मन्थन शिविर का आयोजन किया गया। दिनांक 22 से 26 अप्रेल तक आयोजित इस शिविर में प्रातः कर्मदहन मण्डल विधान का आयोजन हुआ। इसके पश्चात् प्रतिदिन गुरुदेवश्री के प्रवचनों के आधार पर दिन में विद्वान त्रय पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, पण्डित विराग शास्त्री द्वारा इन प्रवचनों का मन्थन किया गया। कार्यक्रम के मध्य में पण्डित संजय शास्त्री के दो व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुआ। विधान के सम्पूर्ण कार्यक्रम विराग शास्त्री द्वारा पण्डित सुनीलजी शास्त्री के कुशल संयोजन में संपन्न हुये।

देवलाली में 19 वाँ बाल संस्कार शिविर का मंगल आयोजन

श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मुम्बई द्वारा उन्नीसवाँ बाल संस्कार का आयोजन सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। दिनांक 29 अप्रेल से 6 मई तक आयोजित इस शिविर में विराग शास्त्री, जितेन्द्र शास्त्री सिंगोड़ी, आशीष शास्त्री टीकमगढ़, विवेक शास्त्री सागर, देवांग गाला, नकुल शास्त्री मुम्बई, प्रतीक शास्त्री मुम्बई,श्रीमति स्वस्ति विराग जैन, मन्थन गाला आदि द्वारा अध्यापन कार्य किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम में श्री वीनूभाई शाह एवं उल्लासभाई जोबालिया मुम्बई का विशिष्ट निर्देशन प्राप्त हुआ।

जबलपुर में 8वाँ जैनत्व आवासीय बाल संस्कार शिविर संपन्न

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, जबलपुर द्वारा आठवाँ आवासीय जैनत्व बाल संस्कार का आयोजन विधिवत् अध्ययन और सुन्दर व्यवस्थाओं के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। स्थानीय ग्रीन वैली स्कूल में दिनांक 7 मई से 14 मई तक आयोजित इस शिविर में विराग शास्त्री, प्रियंक शास्त्री रहली, मंगलार्थी अनुभव जैन करेली, ब्र. श्रेणिक जैन, ब्र. मनोज जैन आदि अनेक शास्त्री विद्वानों और दिल्ली और उदयपुर में अध्ययन बालिकाओं ने अध्यापन कार्य किया गया। संयोजन संतोष शास्त्री बक्स्वाहा द्वारा किया गया।

सेलू में व्याख्यानमाला संपन्न

सेलू में श्री आनन्दकुमारजी काला के नवीन गृह प्रवेश के अवसर पर पंचपरमेष्ठी का आयोजन किया तथा साथ ही जबलपुर से विशेष रूप से आमंत्रित विराग शास्त्री द्वारा त्रिदिवसीय व्याख्यान माला का आयोजन किया गया।

औरंगाबाद में बाल संस्कार शिविर संपन्न

यहाँ सिडको में दिनांक 23 मई से 30 मई तक बाल संस्कार शिविर का सुन्दर कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के अन्तर्गत श्री प्रवचनसार मण्डल विधान का आयोजन किया गया। प्रातः विधान के पश्चात् विधान के आधार से हुये विराग शास्त्री के प्रवचनों का लाभ समाज को प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त संजय शास्त्री राउत, आशीष शास्त्री टीकमगढ़, विवेक शास्त्री सागर, आदि अनेक शास्त्री विद्वानों द्वारा अध्यापन कार्य किया गया। प्रतिदिन शाम को बाल ब्र. अभिनन्दन कुमारजी जैन के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संयोजन स्थानीय विद्वान श्री किशोर शास्त्री, चिन्तामणि शास्त्री, अक्षत शास्त्री आदि का अथक सहयोग प्राप्त हुआ।

चतुर्थ गुरुवाणी मन्थन विद्वत् संगोष्ठी
का लोनावला में ऐतिहासिक आयोजन

श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई और श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विलेपारला, मुम्बई के संयुक्त तत्वावधान में लोनावला के सुरम्य प्राकृतिक वातावरण में चतुर्थ गुरुवाणी मन्थन विद्वत् संगोष्ठी का ऐतिहासिक आयोजन अनेक उपलब्धियों के साथ आनन्दमय वातावरण में संपन्न हुआ। दिनांक 14 जून से 18 जून तक लोनावला हाईवे पर निर्मित श्री महावीर जिनमंदिर में इस गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रथम दिन दोपहर में श्री रमेशभाई कोटड़िया मुम्बई द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इसके बाद डॉ. किरण शाह पूणे की अध्यक्षता में ट्रस्ट के प्रतिनिधि श्री अक्षयभाई दोसी, श्री हितेन ए. सेठ द्वारा कार्यक्रम का उद्‌घाटन हुआ।

कार्यक्रमों के अन्तर्गत प्रतिदिन भव्य जिनमंदिर में प्रातः जिनेन्द्र पूजन का आयोजन हुआ। इसके पश्चात् प्रतिदिन सुबह से रात्रि के समय में तीन स्वाध्याय सत्रों का आयोजन किया गया। विशिष्ट वक्ता के रूप में आमंत्रित पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा द्वारा समयसार गाथा 13, पण्डित चेतनभाई राजकोट द्वारा समयसार गाथा 6, पण्डित अभयकुमारजी द्वारा प्रवचनसार गाथा 114, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया द्वारा नियमसार गाथा 38 और पंडित रजनीभाई बोसी हिम्मतनगर द्वारा प्रवचनसार पर चर्चा की गई। प्रत्येक प्रवचन के पूर्व गुरुदेवश्री का सम्बन्धित गाथा पर आधा घंटे पर प्रवचन चलाया गया और विद्वानों द्वारा इसी प्रवचन के मुख्य बिन्दुओं पर चर्चा की गई। रात्रि में डॉ. मानमलजी कोटा, पण्डित पण्डित महेशचन्दजी ग्वालियर, पण्डित श्रेयांस शास्त्री जबलपुर, पण्डित अनिलभाई दहीसर के द्वारा स्वाध्याय हुआ। अवसरानुसार पण्डित ज्ञायक शास्त्री वसई, पण्डित अभिनय शास्त्री कोटा, मंगलार्थी अनुभव जैन द्वारा प्रतिदिन के विषयों का सार प्रस्तुत किया।

सत्र के पूर्व श्री अजित शास्त्री अलवर, श्री विवेक शास्त्री, सागर आदि के द्वारा आध्यात्मिक पाठ किया गया। कार्यक्रम में देश के 72 नियमित प्रवचनकारों ने सहभागिता की। कार्यक्रम में ब्र. बसन्तभाई दोसी, श्री विमल जैन दिल्ली, श्री हर्षवर्धन जैन औरंगाबाद, श्री वीनूभाई मुम्बई, श्री अशोक जैन जबलपुर आदि गणमान्यजन उपस्थित थे। गोष्ठी के सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री महीपाल शाह बांसवाड़ा के कुशल निर्देशन में विराग शास्त्री, जबलपुर के सहसंयोजकत्व में आनंदपूर्वक संपन्न हुये। इस कार्यक्रम में आशीष शास्त्री टीकमगढ़, श्री विवेक शास्त्री सागर, श्री प्रमेश शास्त्री भोपाल, श्री प्रतीक शास्त्री मुम्बई, श्री नकुल शास्त्री मुम्बई का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। सभी उपस्थित विद्वानों से इस प्रयोग की भूरि-भूरि प्रशंसा की और निरन्तर ऐसे आयोजनों की आवश्यकता पर बल दिया।

टीवी का संदेश
चित्रकथा
● खलील खान
छोटू पूरे
देखता रहता
हर समय वह टीवी
के कार्यक्रमों में
खोया रहता था.
छोटू को केवल मारधाड़ वाली फिल्में और शोरगुल वाले गीत पसंद आते.
इस तरह के कार्यक्रम देखदेख कर छोटू चिड़चिड़ा हो गया था.
छोटू के मम्मीडैडी उसे समझाते, पर उस पर कोई असर न होता

एक दिन छोटू के मम्मीडैडी बाहर गए थे. छुट्टी का दिन था. छोटू घर में अकेला था.
हमेशा की तरह छोटू ने टीवी के बटन घुमाने शुरू किए, पर टीवी में कुछ आया नहीं.
आज टीवी को क्या हो गया है. लाइट भी तो आ रही है.
लगता है टीवी खराब हो गया.
अचानक टीवी स्क्रीन पर एक चेहरा आया, वह बोलने लगा -
पहले तो छोटू घबरा गया. फिर हिम्मत जुटा कर बोला -
छोटू, मैं टीवी हूं. आज मैं तुम से कुछ कहना चाहता हूं.
तुम तो टीवी हो. तुम रोज बोलते हो, फिर इस में नई बात क्या है?

हां, आज तुम्हारी आवाज जरूर अलग लग रही है. बोलो, क्या कहना चाहते हो?
तुम ही नहीं छोटू, देश के लाखोंकरोड़ों बच्चे घंटों टीवी से चिपके रहते हैं. इसलिए मैं कुछ कहना चाहता हूं.
हाथ में रिमोट आते ही तुम चैनल बदलते रहते हो. मैं झटके खाता रहता हूं.
खामोश रह कर मैं तुम्हारी आज्ञा का पालन करता हूं. और बदनाम भी मैं ही होता जाता हूं.
कुछ लोग बिना जानेबूझे हमें 'इडियट बाक्स' भी कहते है. मगर हम मूर्ख नहीं हैं.

मूर्ख तो वे हैं, जो चौबीसों घंटे शोरगुल वाले गीत और मारधाड़ वाली फिल्में देखते रहते हैं. या फिर अंधविश्वास वाली सीरियल्स देखते रहते हैं.
फिर हम क्या देखें, टीवी भैया?
ऐतिहासिक, भौगोलिक सीरियल्स, विज्ञान कथाएं, महान व्यक्तियों की कहानियां, या सामान्य ज्ञान बढ़ाने वाले कार्यक्रम देखने चाहिए.
यदि तुम ऐसा नहीं करोगे, तो सभी तुम्हारे टीवी को 'इडियट बाक्स' कहेंगे. क्या तुम्हें यह अच्छा लगेगा?
बिलकुल नहीं टीवी भैया. मैं वादा करता हूं आज से मैं वही कार्यक्रम देखूंगा, जो जानकारी बढ़ाने वाली हो.

ग्रीष्मकालीन कार्यक्रमों की झलकियाँ

जिन मंदिर शिलान्यास, खड़ैरी (दमोह)

आध्यात्मिक शिविर, औरंगाबाद

बाल शिविर, देवलाली

बाल शिविर, जबलपुर

श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

२ दिसम्बर २०१७ से ७ दिसम्बर २०१७

संस्कार तीर्थ

शाश्वत धाम

उदयपुर

श्री कुन्दकुन्द कहान शाश्वत् पारमार्थिक ट्रस्ट, उदयपुर

संपर्क सूत्र

अजित जैन, बड़ौदा 98243 98999

राजकुमार शास्त्री, उदयपुर 94141 03492

नरेन्द्रकुमार दलावत, उदयपुर 98280 73907